सन्मार्ग

॥ सन्मार्गं एव सर्वत्र पूज्यते नापथः क्वचित ॥

फाल्गुन कृष्ण पक्ष ? संवत् २०२९, २६ फरवरी १९७३

जब काम है, तो आराम क्यों ? : युवा असन्तोष है, तो शोर क्यों ?

उपराष्ट्रपति श्री गोपाल स्वरूप पाठक से विशेष भेंट

– आलोक मेहता –

संसद भवन का एक हिस्सा– राज्यसभा । [illegible] नैतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों की प्रतिभाएं और [illegible] हंगामा [illegible] लेकिन एक व्यक्ति है—जो पिछले चार वर्षों से राज्यसभा सत्रों के दौरान अपने निर्धारित समय पर कार्य करने में एक भी दिन गैर हाजिर नहीं रहा । इस नियमितता पर जहाँ सदन और सारे राष्ट्र को नाज है, वहीं इस व्यक्ति को भी लगता है आत्मिक सन्तोष और आनन्द ।

यह और कोई नहीं—राज्यसभा के अध्यक्ष और भारत के उपराष्ट्रपति श्री गोपालस्वरूप पाठक हैं । इस नियमितता का रहस्य उनके खुद के अलावा दूसरा कौन अच्छी तरह बता सकता था । सोचा उनकी वर्षगाँठ भी नजदीक ही है—२६ फरवरी को, कुछ चर्चा कर ही ली जाये । और [illegible]

व्यक्ति चर्चा

[illegible] मुस्कराये और फिर गम्भीर हो गये, बोले—जब मुझे राज्यसभा की अध्यक्षता का कार्य सौंपा गया है और यही मेरी ड्यूटी है, तब मैं यूं ही गैर हाजिर क्यों रहूं ? काम रहने पर किसी भी आदमी को 'आराम' की बातें नहीं सोचनी चाहिए । इस तरह की बातें कहनी और सुननी ही काफी नहीं होतीं, इन पर अमल करना होता है । मैं इसी लिए अपने जीवन की सबसे बड़ी जिम्मेदारी 'कार्य' के प्रति नियमितता मानता हूँ । इस कारण 'राज्यसभा' का सत्र न होने पर अपने (उपराष्ट्रपति) कार्यालय का काम निपटा लेता हूँ । मुझे इसी में आत्मिक सन्तोष और आनन्द मिल जाता है ।

कर्तव्यनिष्ठा

"इस नियमितता के साथ [illegible]

हर नागरिक इस भावना को महसूस करने लगे, अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह निभाये, तो इसमें कोई शक नहीं कि सभी सामाजिक और आर्थिक समस्याएं स्वतः समाप्त हो जायें । इस तरह की भावना बचपन से ही नागरिकों में भरे जाने की आवश्यकता है । बस उम्र में ही जब बच्चा यह महसूस करे कि चाहे कोई उस पर नजर रखे या न रखे, उसे अपना काम पूरा करना है, तो इसके [illegible] अनुभव [illegible] वह जीवन भर यह आदत नहीं छोड़ेगा ।"

[illegible] राष्ट्रीय समस्याओं की ओर [illegible] श्री पाठक ने [illegible]

उपराष्ट्रपति श्री गोपालस्वरूप पाठक

[illegible] शैक्षणिक संस्थाओं में छात्रों को [illegible] "युवा-असन्तोष" की समस्या पर ही प्रश्न कर दिया ।

युवा असन्तोष

"हाँ—यह असन्तोष की समस्या है ।" [illegible] चिन्ता [illegible] सारे देश के युवा [illegible] एक मिनट रुक कर बोले [illegible] तुम इसे असन्तोष कहते हो, आक्रोश और [illegible] नैतिक, सामाजिक और राजनैतिक [illegible]

और राष्ट्रीय कर्तव्यों का [illegible] उन्हें ज्ञान कराया जाना चाहिए, समग्र समाज के हितों और कल्याण का लक्ष्य । समझाया जाना चाहिए अनुशासन, त्याग, ईमानदारी और राष्ट्र को सर्वोपरि मानने के आदर्श ।"

"किन्तु यह सब सिखाने से युवकों को या राष्ट्र को क्या मिलेगा ।"

सुख, सन्तोष, शान्ति और प्रगति । ऊंची भावनाएं होने पर हर नागरिक का कदम सही रास्ते पर होगा, तो देश गलत रास्ते पर कैसे जायेगा ? हर आदमी अपनी जिम्मेदारी समझेगा, तो समस्या कहां रह सकेगी । इसलिए गलत कदम उठाने पर समस्याएं बढ़ती हैं—आत्मिक आनन्द और सन्तोष नहीं मिलता, जिसे तुम युवा असन्तोष कहते हो, तो फिर 'शोर' क्यों करते हो । सोच सही और सच्चा रास्ता पकड़ो, देखो फिर सारी गुत्थियां कैसे जल्दी-जल्दी सुलझती हैं ।"

"बाबा जी, तो सबसे बड़ा और पहला रास्ता कौन सा हो सकता है ?"

"अपने राष्ट्र को स्वयं के जीवन से भी सर्वोपरि मानने का रास्ता । हर युवक इस आदर्श को अपना कर अपना जीवन [illegible] देश की सामाजिक और आर्थिक [illegible] बदल जायें ।"

"अच्छा जी, यह तो रही आदर्शों की बातें... आपकी ७६ वीं वर्षगांठ २६ फरवरी को है । अपने पिछले जीवन के बारे में कुछ बताइये ना ।"

"अरे भई, जीवन के बारे में क्या बताऊं । उत्तर प्रदेश [illegible] हिन्दुस्तान में उत्तर-प्रदेश के बरेली नामक स्थान पर एक मध्यम श्रेणी के परिवार में मेरा जन्म हुआ । पिता जी रेलवे में एकाउन्टेंट थे, दूसरी जमात पास करने के बाद उनका तबादला लुधियाना हो गया और मेरी पढ़ाई वहीं हुई । कार्य विभा- [illegible] प्रारम्भिक शिक्षा के कारण ही मेरे जीवन में [illegible] और त्याग की भावनाएं [illegible]

मजबूती । मास्टर की डांट भी [illegible] उतारो । उस समय तो हम गुरु को ईश्वर के समान आदर करते थे । उनकी हर आज्ञा का पालन करते थे । फिर पढ़ाई भी खूब करते थे और उनका [illegible] पाते थे । मेरे गुरु अध्यापक श्री किशन सिंह अभी भी लुधियाना में हैं । कुछ समय पहले लुधियाना जाने पर मैंने अपने बचपन की तरह ही गुरु जी के पास जाकर उनके पैर छुए । आंखें भर गये... मुझे और उन्हें दोनों को [illegible] ही नहीं मालूम था ।"

"मतलब उस जमाने [illegible] कठोरता होने पर आपको स्नेह और लाड़प्यार की बहुत कमी लगी होगी ?"

"नहीं, तब तो लाड़प्यार और अधिक होता था । [illegible] काम करने में रहती थी । वरना गुरुजी, माता जी-पिताजी बहुत स्नेह करते थे । उस जमाने में पिताजी मुझे हर महीने "एक रुपया" देते थे, जो मुझ से पूरा खर्च ही नहीं होता था । क्योंकि [illegible] खर्च की बात ही [illegible] थी ।"

"पढ़ाई के बाद आप[illegible] रास्ता अपनाया ?"

"लुधियाना, लाहौर और प्रयाग में पढ़ाई करने के बाद मैं अपने जन्म स्थान बरेली में वकालत करने पहुंच गया । पिताजी ने इस शुरुआत के लिए एक हजार रुपये देकर अपना जीवन स्वयं बनाने की अनुमति दे दी । लेकिन कुछ समय बाद मैंने इलाहाबाद को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया । वहीं धीरे-धीरे मुझे राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में आने का अवसर मिला । फिर वकालत और आजादी की लड़ाई का काम साथ-साथ चलता रहा ।"

"और आजादी मिलने के बाद ?"

"अरे... स्वतन्त्रता मिलने के बाद तो काम करने का उत्साह अधिक बढ़ गया । जाने कितनी संस्थाओं में [illegible] रहा । नेहरू जी ने १९४९ में दक्षिण अमेरिका भेज दिया [illegible] कहाँ-कहाँ जाना पड़ा । [illegible] राज्यसभा का सदस्य [illegible] आज भी इसी सदन में [illegible]

Printed by BoltPDF (c) NCH Software. Free for non-commercial use only.